शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनजातीय क्षेत्रों में 'इग्नू ग्राम चौपाल' उच्च शिक्षा जागरूकता की अभिनव पहल

डॉ. शैलेन्द्र शर्मा, डॉ. मनीषा शर्मा, हरिओम विश्वकर्मा
इग्नू नियमित अध्ययन केन्द्र 15233
आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एण्ड साईंस
धामनोद, धार, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शिक्षा के लिए एक उक्ति प्रसिद्ध है 'यदि पहाड़ मुहम्मद के पास न आये तो मुहम्मद को पहाड़ के पास जाना चाहिए। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली इस उक्ति को पूरी तरह चरितार्थ करती है। भारत में शिक्षा के व्यापक प्रचारप्रसार के लिए इस प्रणाली को अपनाया गया। ग्रामीण और आदिवासी बहुल क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए इग्नू ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया। इसके बहुत सकारात्मक परिणाम दिखाई दिए। इस क्षेत्रीय कार्य में धार जिले में आयोजित इग्नू ग्राम चौपाल का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

भूमिका

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाओ, यह प्रार्थना भारतीय संस्कृति का मूल स्तम्भ है। प्रकाश में व्यक्ति को सब कुछ दिखाई देता है, अंधकार में नहीं। यहां प्रकाश से तात्पर्य ज्ञान से है। ज्ञान से व्यक्ति का अज्ञानता रूपी अंधकार नष्ट होता है और उसका वर्तमान तथा भावी जीवन सुखमय बनता है। ज्ञान से उसकी सुप्त इन्द्रियां जागृत होती है। उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है जो उसके जीवन को प्रगति पथ पर ले जाती है। व्यक्ति को ज्ञान का यह प्रकाश शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त होता है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत् रूप से विभिन्न प्रकार की शिक्षा ग्रहण करता है अर्थात् यह जीवन भर सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का क्षेत्र विस्तृत होता है, क्योंकि यह जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है। महात्मा गांधी के अनुसार "शिक्षा वह दिव्य अस्त्र है जिससे व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता है और उसका व्यक्तित्व अत्यन्त सुदृढ़ हो जाता है। शिक्षा के महत्व को समझते हुए भारत में प्राचीन काल में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का विकास हुआ जिसमें विद्यार्थी को गुरू के सान्निध्य में रहकर गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। कालांतर में भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजी शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। यह शिक्षा सैद्धांतिक अधिक और व्यवहारिक कम थी स्वतंत्रता के बाद भारतीय नेतृत्वकर्ताओं ने इसी पद्धति को आगे बढ़ाया इसके परिणाम स्वरूप साक्षरता का स्तर तो बढ़ा लेकिन शिक्षा के स्तर एवं गुणवत्ता में कमी आने लगी और आज आलम यह है कि शिक्षा प्राप्त करके भी उच्च शिक्षित वर्ग बेरोजगार घूम रहा है। शिक्षित लोगों में नैतिकता, संवेदनशीलता, मानवता, अपनत्व जैसे भावों की

कमी होती जा रही है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र उच्च एवं प्रतिष्ठित रोजगार प्राप्त कर अधिक से अधिक धन कमाना हो गया है। शिक्षा से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से व्यक्ति में दूसरों को समझने की क्षमता विकसित होती है। किन्तु आज डिग्री प्राप्त करने के लक्ष्य को ही उच्च शिक्षा माना जाता है।

दूसरी ओर भारतीय समाज के संदर्भ में शिक्षा के प्रति उदासीनता भी दिखाई देती है। स्वतंत्रता के बाद सरकार द्वारा शिक्षा के स्तर उन्नत करने के लिए विभिन्न प्रयास किये गये। नये स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय खोले गये, आरक्षण व्यवस्था लागू की गई, छात्रवृत्ति, छात्रावास, मुफ्त लेखन-पठन की सामग्री प्रदान की गई। शिक्षण शुल्क कम किया गया। इन प्रयासों के बावजूद शिक्षा के प्रति उदासीनता का भाव आज भी बना हुआ है। पारिवारिक समस्या, आजीविका की समस्या, व्यक्तिगत समस्या आदि के कारण भी लोगों को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ती है, जिसके कारण उनका उच्च शिक्षा का स्वप्न अधूरा ही रह जाता है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ।

इग्नू (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय)

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत सन 1985 में दिल्ली में इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी प्रांरभ की गई। जन-जन तक शिक्षा को पहुंचाने के लक्ष्य को लेकर प्रारंभ की गई इस यूनिवर्सिटी ने अपने लक्ष्य को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त की है। इसलिए आज इसे जन-जन का विश्वविद्यालय भी कहा जाने लगा है। इग्नू विश्वविद्यालय को प्रारम्भ करने का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा को प्रसारित करना था। साथ ही जो विद्यार्थी किसी कारणवश अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख सके, उन्हें पुनः शिक्षा प्रारम्भ करने का अवसर प्रदान करना था। आज भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में इग्नू के केन्द्र संचालित हो रहे हैं। अब तक लाखों लोग इग्नू के माध्यम से लाभान्वित हो चुके हैं। इग्नू में सामान्य शिक्षा, व्यक्तित्व विकास, रोजगारोन्मुखी तकनीकी, जीवन प्रबंध, कृषि आदि से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के डिग्री, डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स संचालित किये जा रहे हैं। यह सभी कोर्स घर बैठे अल्प शुल्क पर स्वाध्याय के माध्यम से किये जा सकते हैं। इग्नू के माध्यम से अनेक लोगों का उच्च शिक्षा प्राप्त करने का लक्ष्य पूरा हो सका है। इसी संदर्भ में इग्नू को विस्तारित करते हुए भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत म.प्र. के धार जिले के निमाड़ क्षेत्र में धामनोद का स्पेशल स्टडी सेंटर वर्ष 2014 में खोला गया। इस केन्द्र की सफलता को देखते हुए वर्ष 2018 में इसे स्थाई केन्द्र की मान्यता प्राप्त हुई।

इग्नू ग्राम चौपाल

धार जिला आदिवासी बाहुल्य जिला है। ग्रामवासी मुख्य रूप से अंतर्मुखी स्वभाव के होते हैं एवं उनकी इतनी क्षमता नहीं होती कि वे किलोमीटर की दूरी तय कर संस्था में आकर अपनी बात रख सकें। इस प्रकार की समस्या सामान्य रूप से देखने में आती है। अतः इन बातों को ध्यान में रखते हुए 'इग्नू ग्राम चौपाल' की योजना बनाई गई ताकि शाम के वक्त जब सभी ग्रामवासी अपने कार्य से निवृत्त हो जाते हैं तब एक स्थान पर इकट्ठा कर उनको उच्च शिक्षा, आजीविका एवं व्यक्तित्व विकास की जानकारी के साथ इग्नू के कोर्स इन सभी में कैसे कारगर सिद्ध होते हैं, उन्हें विस्तृत जानकारी दी जाती है। उनकी समस्याओं

का निराकरण किया जाता है। साथ ही उनकी विभिन्न कोर्स के प्रति जिज्ञासा को शांत करने के साथ प्रश्नों का हल बताया जाता है। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्रीय भाषा में जानकारी दी जाती है एवं प्रत्येक व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से बात की जाती है। जिससे उनका रूझान पढ़ाई के प्रति बढ़ता है। वर्तमान में इग्नू केन्द्र **धामनोद** द्वारा इग्नू ग्राम चौपाल कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें इग्नू धामनोद की टीम द्वारा किसी भी दिन पूर्व निर्धारित गाँव में ग्रामवासियों को एकत्रित कर उन्हें इग्नू कोर्सेस एवं इससे होने वाले लाभों से परिचित कराया जाता है। इस कार्यक्रम का हाल ही में खरगोन जिले के कसरावद तहसील के अंतर्गत **रूपखेड़ा** एवं **मगरखेड़ी** ग्राम में इग्नू ग्राम चौपाल का आयोजन किया जा चुका है। रूपखेड़ा में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 70 ग्रामवासियों ने भाग लेकर इग्नू की जानकारी प्राप्त की एवं 22 लोगों ने इग्नू में प्रवेश लेने की इच्छा व्यक्त की। मगरखेड़ी में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 80 ग्रामवासियों ने भाग लिया। **पिपल्दागढ़ी** में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 57 ग्रामवासियों ने, रेगवां में लगभग 136 ग्रामवासियों ने भाग लिया और लगभग 25 लोगों ने इग्नू से कोर्स करने की सहमति दी। पिपल्दागढ़ी ग्राम चौपाल में ग्रामवासियों को इग्नू के सभी कार्सेस के बारे में जानकारी प्रदान की एवं उनकी समस्याओं का निराकरण किया। इस कार्यक्रम का सकारात्मक परिणाम यह रहा कि उपस्थित ग्रामवासियों ने इस कार्यक्रम की न सिर्फ प्रशंसा की बल्कि इस प्रकार के कार्यक्रम बार-बार आयोजित करने हेतु आदर्श महाविद्यालय से आग्रह किया।

सीखने के दौरान प्राप्त अनुभव

- समुदाय के नेताओं को संवेदनशील बनाना पहली आवश्यकता है। सामुदायिक संवेदीकरण गतिविधियों के दौरान देखे गए प्रमुख मुद्दों में से एक बाहरी एजेंसियों के लिए समुदाय का अजीब व्यवहार था। लोग अपनी संस्कृति के लिए विदेशी लोगों द्वारा उन्हें दी गई जानकारी पर अविश्वास करते हैं। इसलिए यह महसूस किया गया कि सामुदायिक संवेदीकरण की पूरी कवायद में समुदाय के नेताओं को शामिल किया जाना चाहिए। ये नेता महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे एक ही सांस्कृतिक परिवेश का हिस्सा हैं, एक ही भाषा बोलते हैं और दैनिक आधार पर समुदाय के सदस्यों से मिलते हैं। लोगों के लिए उनकी राय बहुत मायने रखती है और इसलिए समुदाय के सदस्यों से सीधे संपर्क करने के बजाय पहले उन्हें संवेदनशील बनाने की जरूरत है। हमने महसूस किया है कि सामुदायिक जुड़ाव के लिए हमारा मॉडल विभिन्न प्रकार के समुदाय के नेताओं जैसे धार्मिक नेताओं, बुजुर्ग व्यक्तियों, सरपंचों, ग्राम सभा के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित होना चाहिए। सामुदायिक जुड़ाव का हमारा अभ्यास उस हद तक सफल होगा, जब तक ये समुदाय के नेता हमारे कार्यक्रमों और नीतियों के बारे में संवेदनशील होते हैं। समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत करने से पहले ऐसे सामुदायिक नेताओं के लिए बड़े पैमाने पर संवेदीकरण अभियान चलाया जाना चाहिए।
- नेताओं, भावी छात्रों, उनके माता-पिता को नौकरी के अवसरों के नए क्षेत्रों की नौकरी की क्षमता के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। अधिकांश जनजातीय समुदायों को कौशल विकास के नए क्षेत्रों के बारे में संवेदनशील नहीं बनाया गया है। अज्ञात विषय

क्षेत्रों में जाते समय वे असुरक्षित महसूस करते हैं। इग्नू के अधिकांश कार्यक्रम अपरंपरागत हैं और काफी हद तक उनके लिए अज्ञात हैं। कौशल विकास के नए क्षेत्रों के बारे में उन्हें जागरूक करने की जरूरत है। इस दिशा में पहला कदम उन लोगों को उन्मुख करना होना चाहिए जो समुदाय के सदस्यों को जानकारी प्रदान करते हैं। इसलिए इन समुदायों में राय बनाने वालों को संवेदनशील बनाने की जरूरत है।

- जनजातीय समुदाय सामूहिक निर्णय लेते हैं और इसलिए उन्हें सामूहिक रूप से संपर्क करने की आवश्यकता होती है। शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए जनजातीय समुदायों की प्रतिक्रिया ज्यादातर उनके सामूहिक व्यवहार द्वारा निर्देशित होती है। वे ऐसे मामलों पर सहमति से सामूहिक निर्णय लेने की प्रवृत्ति रखते हैं। इसलिए पूर्व प्रवेश परामर्श कार्यक्रम सामूहिक रूप से एक अनौपचारिक सेटिंग में आयोजित किए जाने चाहिए जहां लोग सहज महसूस करते हैं।
- समुदाय आधारित संगठनों को शामिल करने की आवश्यकता है। जनजातीय समुदाय के सदस्यों को उनके समुदाय आधारित संगठनों के माध्यम से ही लगाया जा सकता है। हमने महसूस किया कि ग्राम सभा या धार्मिक संगठनों जैसे समुदाय आधारित संगठनों का आदिवासी समुदायों पर बहुत गहरा प्रभाव है। हमें लगता है कि ऐसे समुदाय आधारित संगठनों को मजबूत किया जाना चाहिए, उनकी क्षमताओं का निर्माण किया जाना चाहिए और उन्हें इग्नू के प्रचार संचालन के लिए वित्तीय रूप से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। समुदाय आधारित संगठनों का ऐसा प्रस्तावित वित्तीय प्रोत्साहन काफी उचित है, क्योंकि समाचार पत्रों जैसे विज्ञापन के पारंपरिक साधन ग्रामीण इलाकों में नहीं पहुंचते हैं। उनसे तभी संपर्क किया जा सकता है जब वे अपनी आजीविका प्रतिबद्धताओं से अपेक्षाकृत मुक्त हों। आदिवासी समुदायों की शैक्षिक गतिविधियाँ पहले नहीं आती हैं। आजीविका उनकी प्राथमिकता है। इसलिए हमें संवेदीकरण कार्यों को व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। जब वे अपनी आजीविका के कार्यों और व्यस्त कृषि गतिविधियों से अपेक्षाकृत मुक्त हों। ऐसा समय आमतौर पर शाम के समय या कम आर्थिक गतिविधियों के महीनों के दौरान होता है। जनजातीय क्षेत्रों में सूचना प्रणाली को उनके समुदाय आधारित संगठनों के परामर्श से उनकी आजीविका प्रतिबद्धताओं को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

जनजातीय क्षेत्रों में इग्नू का हस्तक्षेप उनके समुदाय आधारित संगठनों की विशेष भूमिका पर आधारित होना चाहिए। जनजातीय समुदायों में समुदाय की एक मजबूत भावना है और इग्नू के शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए उनकी प्रतिक्रिया अंततः इस बात पर निर्भर करेगी कि वे एक समुदाय के रूप में कैसा महसूस करते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में समुदायों की रुचि बनाए रखने के लिए उन्हें इग्नू के प्रचार कार्यों के लिए आवश्यक स्पैडवर्क करने के लिए वित्तीय रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।